नवाँ परिच्छेद

नैतिक आदर्श या मापदण्ड
(MORAL IDEAL OR STANDARD)

9·1 विषय-प्रवेश

नैतिक आदर्श या मापदंड ही नीतिशास्त्र का मुख्य विषय है। यों तो बिना इस शास्त्र का अध्ययन किये भी मनुष्य कर्मों का नैतिक निर्णय करता है अर्थात् मानव-आचरण की अच्छाई-बुराई परखता है, पर कहाँ तक वे ठीक हैं और किन आदर्शों को दृष्टिकोण में रखकर निर्णय किया गया है, वह साधारणतः नहीं जानता। प्रत्येक निर्णय के लिए एक आदर्श या मापदण्ड की आवश्यकता होती है। कोई अनुमान ठीक है या गलत, यह अनुमान के नियमों के द्वारा ही पता चलता है। वहाँ भी नियम की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार कोई मानव-आचरण नैतिक दृष्टिकोण से अच्छा है या बुरा, यह नैतिक नियमों के द्वारा ही जाना जा सकता है। कैसे आचरण को आदर्श मानना चाहिए, यह जान लेने पर ही मनुष्य के कर्मों का नैतिक निर्णय ठीक हो सकता है।

हालाँकि हर निर्णय में एक नियम की आवश्यकता होती है, पर नैतिक आदर्श दूसरे नियमों से भिन्न होता है। साधारणतः दूसरे नियम यथार्थ होते हैं। जिस रीति से किसी वस्तु का व्यापार होता है, वही उसका नियम है। पर नैतिक नियम आदर्श-निर्देशक होता है। मानव-आचरण का क्या नियम है, इससे हमारा सम्बन्ध नहीं, अपितु मानव-आचरण कैसा होना चाहिए, यही नैतिक नियम है। अतः बटलर ने ठीक ही कहा है कि मानव-जीवन में नैतिक नियम का अत्यधिक मूल्य है। जो वस्तु जिस रीति से चल रही है वह तो चल ही रही है, कैसे उसे चलना चाहिए, यह जानना आवश्यक है।

किसी-न-किसी नैतिक आदर्श का साधारणतः अस्पष्ट रूप से सभी को ज्ञान रहता है, क्योंकि सभी मनुष्य दूसरे के और स्वयंकृत कर्मों को अच्छा या बुरा कहते हैं। हमें उन नैतिक नियमों को स्पष्टतया जानना है और भिन्न-भिन्न प्रचलित नियमों की मीमांसा करनी है।

नैतिक नियम-सम्बन्धी समस्या को दो रूपों में व्यक्त किया जा सकता है—(i) क्या उचित (right) है और (ii) क्या अच्छा या आदर्श (good) है। यदि कौन-सा आचरण उचित है, यह प्रश्न किया जाता है तो इसका संकेत किस नियम से है; क्योंकि वैसे कर्म उचित हैं जो नियमानुकूल हों। नियम से तुलना करके ही यह जाना जा सकता है कि कौन-सा आचरण उचित है और कौन-सा अनुचित। आधुनिक दृष्टिकोण यही है। पर, नियम स्वयं किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए होते हैं, अतः वास्तविक समस्या यह है कि जीवन का सर्वोच्च आदर्श क्या होना चाहिए। इसी समस्या से सम्बन्धित प्रश्न है कि 'क्या शुभ है?'

Scanned with CamScanner

इस प्रकार नैतिक नियमों के सम्बन्ध में विभिन्न विचार हैं।[1]

1. किसी बाह्य नियम को नैतिक मापदण्ड मानना—बाह्य नियमवाद, बहिर्गत नियमों को नैतिक मापदण्ड मानना, कानूनी या वैधानिक मत (legal or jural theory)।

2. आन्तरिक नियम को नैतिक मापदण्ड मानना—अन्तःअनुभूतिवाद, अपरोक्ष ज्ञानवाद या सहज ज्ञानवाद (intuitionism)।

3. जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को नैतिक मापदण्ड मानना—हेतुवाद या प्रयोजनवाद (teleological theory)।

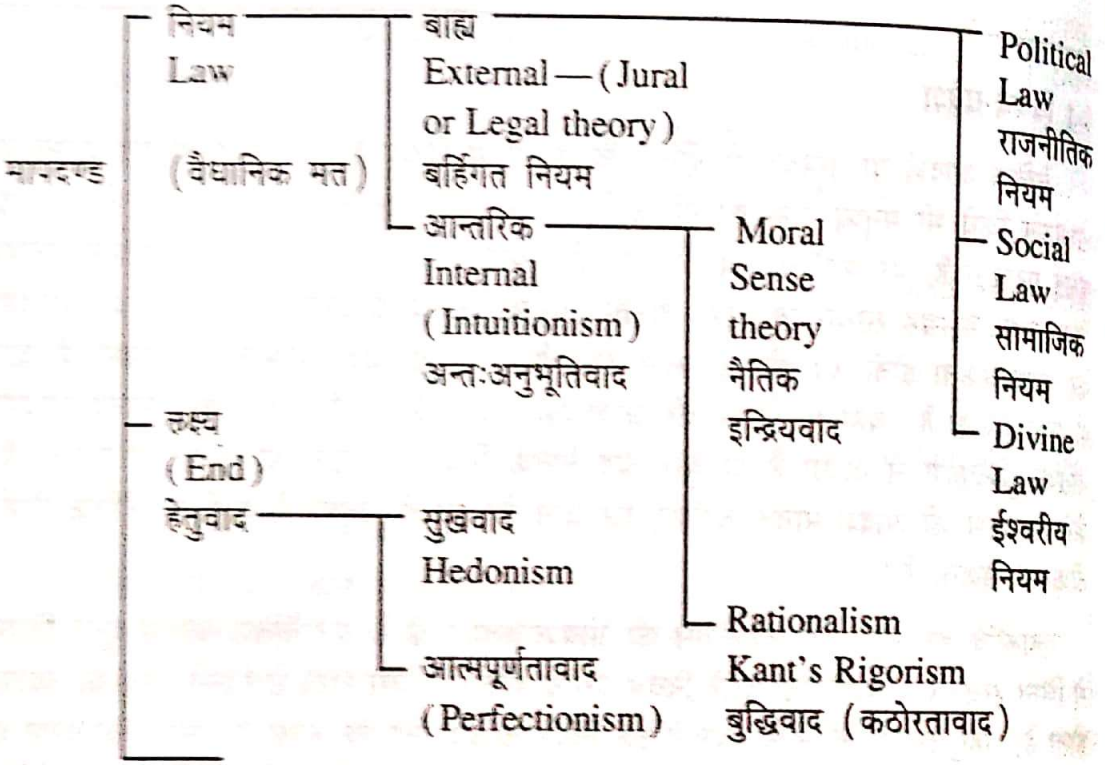

मूल्य का विचार (Value as standard)

कुछ विद्वानों के अनुसार आचरण-सम्बन्धी आदर्श किसी बाह्य प्राधिकारी (authority) द्वारा ही निर्धारित किया जा सकता है और उसे मनुष्य को अन्तिम नियम मान लेना चाहिए। उन्हीं नियमों के अनुसार ही मानव-आचरण होना चाहिए। यह बाह्य सत्ता समाज, राज्य, प्रकृति या ईश्वर हो सकती है। इस प्रकार किसी ने समाज के नियमों को, किसी ने राज्य के नियमों को,

---

1. मूर्डरहेड नैतिक चेतना के विकास की तीन अवस्थाएँ बतलाते हैं :—
   1. पहली अवस्था में मानव-व्यवहार का नियन्त्रण बहिर्गत नियमों के द्वारा होता है। इस अवस्था में किसी बाह्य सत्ता को ही सर्वशक्तिमान और आचरण-सम्बन्धी बातों में सर्वोच्च मान लिया जाता है। यह मानव-जाति की विचारहीन अवस्था है। अतः बाह्य नियम ही सर्वोच्च माना जाता है।
   2. जब मनुष्य की विचार-शक्ति विकसित हो जाती है और उसे अपनी शक्तियों का ज्ञान होता है तब वह नैतिक निर्णय में अपने को ही सर्वाधिकारी मानने लगता है। अतः आन्तरिक नियम ही सर्वोच्च माना जाता है।
   3. इसके बाद नियमों की उपकारिता अर्थात् लक्ष्य का विचार किया जाता है तब किसी आदर्श को ही नैतिक आदर्श माना जाता है। अतः लक्ष्य ही सर्वोच्च नियम माना जाता है।

Scanned with CamScanner

किसी ने ईश्वरीय नियमों को ही नैतिक नियम बतलाया है। यह मत बाह्य नियमवाद या वैधानिक या कानूनी मत कहा जाता है।

पर जब मनुष्य की विचार-शक्ति विकसित हो जाती है, तब वह अन्तःकरण द्वारा प्रस्फुटित विचार को ही नैतिकता के सम्बन्ध में आखिरी मानता है। अन्तःकरण कौन-सी शक्ति है ? इसके विषय में दो मत हैं—एक तो इसे इन्द्रिय-विशेष बतलाता है और दूसरा, इसे विवेक-शक्ति मानता है।

प्रत्येक नियम का कोई लक्ष्य होता है। अतः कुछ विद्वानों ने लक्ष्य का विचार ही मुख्य बतलाया है। यह हेतुवादी या प्रयोजनवादी मत है। पर जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए, इसके सम्बन्ध में दो मत हैं—पहला सुखवादी, जो सुख को ही जीवन का चरम लक्ष्य विचारते हैं और दूसरा जो आत्मपूर्णता को चरम लक्ष्य विचारते हैं। आत्मपूर्णता कौन-कौन से कर्मों का आचरण करने से सिद्ध होगी यह मूल्य के सिद्धान्त से स्पष्ट होता है। इसे मूल्य का सिद्धान्त कहा जाता है।

9·2 नैतिक सिद्धान्तों का विकास

नीतिशास्त्र का इतिहास

यूरोपीय नीतिशास्त्र को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है—(i) प्राचीन यूनानी काल, (ii) माध्यमिक काल और (iii) आधुनिक काल। प्रत्येक काल के आचार-सम्बन्धी विचारों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। प्राचीन काल में नागरिक नियमों का पालन करनेवाला ही अच्छा व्यक्ति विचारा जाता था। मध्यकालीन युग में धर्म-प्रचार के कारण धार्मिक जीवन-यापन करनेवाला 'अच्छा' व्यक्ति माना जाने लगा। व्यक्तिवादिता तथा स्वतन्त्रता आधुनिक काल की विशेषता रही है। अतः इस काल में स्वतन्त्र विचारपूर्ण 'अच्छे' जीवन का सार विचारा जाने लगा है।

यूनानी नीतिशास्त्र (प्राचीन)—जिस प्रकार एक बालक अपने विचार की अविकसित अवस्था में परिवार की परिपाटी का ही पालन करता है उसी प्रकार मनुष्य आदिकाल में परिपाटी तथा प्रचलनों के अनुसार ही आचरण करना अपना कर्त्तव्य विचारता था। उस काल में परिपाटी को ही उचित आचरण का मापदण्ड विचारा जाता था। यह मानव-जीवन की विचारहीन अवस्था थी। मनुष्य की विचारशक्ति विकसित हो जाने पर जब वह कर्मों के औचित्य-अनौचित्य पर तथा उनके भेदों पर विचार करने लगा तो नीतिशास्त्र की मौलिक समस्याएँ उद्‌भूत हुई। यूनान के सूफियों ने इन समस्याओं पर विचार करना प्रारम्भ किया। उन्होंने प्रचलनों की समीक्षा की और यह बतलाया कि उसमें किसे वास्तविक दृष्टि से नैतिक विचारा जाय। कुछ सूफियों ने तो नैतिकता को आत्मनिष्ठ विचारा है। सुकरात ने सूफियों के मत का खण्डन किया और उसने बतलया कि नैतिक गुण वस्तुनिष्ठ हैं। नैतिक जीवन के लिए नैतिकता का ज्ञान आवश्यक है। प्लेटो तथा अरस्तू ने सुकरात की भाँति ज्ञान को नैतिक जीवन के लिए आवश्यक तो विचारा ही है, पर उन्होंने विचारा कि यह ज्ञान तत्त्व का होना चाहिए। प्लेटो और अरस्तू के पश्चात् उनके अनुयायियों के कई दल हो गये, जिनमें मुख्य सीनीक्स तथा सीरनेवादी थे। सीरनेवादियों के अनुसार सुखदायी कर्म शुभ हैं, अतः इच्छाओं की तृप्ति को ही शुभ कर्मों का मापदंड विचारा गया। सीनीक्स ने मानव-इच्छाओं से स्वतंत्र बौद्धिक जीवन को ही शुभ जीवन बतलाया। बाद में सीनीक्स के अनुयायी स्टोइक्स हुए और सीरनेवादियों के एपीक्यूरीयस। एपीक्यूरीयस ने इच्छाओं की पूर्ति को शुभ जीवन तो माना है, पर बतलाया कि ऐसा जीवन विवेकपूर्ण होना चाहिए। स्टोइक्स ने प्राकृतिक जीवन को नैतिक जीवन बतलाया है।

Scanned with CamScanner

मध्यकालीन युग—मध्यकालीन यूरोप में धर्म का बोलबाला रहा है। धर्म-ग्रन्थों से आधार के नियम व्युत्पन्न किये गये। इसलिए इस युग में नीतिशास्त्र का स्वतंत्र विकास नहीं हो सका।

वर्तमान काल—वर्तमान काल में रूढ़िवाद के विरुद्ध आन्दोलन हुआ और स्वतंत्र विचार की पद्धति अपनायी गयी। पुरातन विचारों और धार्मिक रूढ़ियों को अपनाने के लिए बुद्धि और तर्क की सहायता ली जाने लगी। इसलिए इस युग में औचित्य-अनौचित्य, शुभ-अशुभ के मापदंड की बौद्धिक मीमांसा आरम्भ हुई। अतः आचरण-सम्बन्धी अनेक मत प्रतिपादित किये गये।

(i) कुछ विचारकों ने बतलाया है कि शुभ-अशुभ आदि का भेद आत्मनिष्ठ है। नैतिक निर्णय व्यक्तिगत विचारों पर निर्भर है। जो व्यक्ति को वरणीय हो वही उचित है। अतः इस विचार के अन्तर्गत वे सभी मत हैं, जिनके अनुसार नैतिक-विभेद मात्र मानव-प्रचलन है। प्राचीन सूफियों तथा वर्तमान सन्देहवादियों का यही विचार है।

(ii) कुछ विचारकों ने नैतिक भेदों को अन्तःकरण पर निर्भर बतलाया है। अन्तःकरण के द्वारा मनुष्य को नैतिक भेदों का ज्ञान होता है। सेफ्ट्सबरी, हचीसन, रीड आदि का यही विचार है।

(iii) कुछ विचारकों ने नैतिक भेदों को नियमों पर आश्रित माना है। पर इस नियम के स्वरूप के विषय में भिन्न मत हैं। कोई उसे प्राकृतिक नियम, कोई राज्य का नियम, कोई सामाजिक नियम तथा कोई ईश्वरीय नियम मानता है। बटलर, स्मिथ आदि इसके माननेवाले हैं। कुछ विचारक नैतिक भेदों को कर्म के परिणाम पर आश्रित बतलाते हैं। प्राचीन सीरनेवादी तथा एपीक्यूरस और वर्तमानकालीन मिल तथा सीजविक इसके अनुयायी हैं।

9.3 नैतिक सिद्धान्तों का वर्गीकरण

Scanned with CamScanner